P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-7* ISSUE-11* July- 2020
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

आधुनिक स्थापत्य कला का स्रोत–वैदिक युग

Vedic Yuga – The Inspiration Behind Modern Architecture

Paper Submission: 05/07/2020, Date of Acceptance: 23/07/2020, Date of Publication: 27/07/2020

अंजू सेठ
एसोसिएट प्रोफेसर,
संस्कृत विभाग,
सत्यवती महाविद्यालय,
दिल्ली, भारत

सारांश

वेद ज्ञान के रत्नाकर हैं। सभी कलाएं एवं विद्याएं वेद निसृत हैं जो विविध आयामों एवं अनन्त दिशाओं को प्राप्त कर सर्वाङ्गीणता को प्राप्त करती हैं। त्रिकाला तीत स्थापत्य कला के वैदिक युगीन उपलब्ध तथ्यों को मूल उद्धरणों के माध्यम से विवेचित करना एवं वर्तमान युगीन गृह निर्माण एवं स्थापत्य कला संबंधी तथ्यों का विवेचनात्मक विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर काल जयी वैदिक युगीन स्थापत्य कला की विशिष्टता प्रदर्शित करना तथा वर्तमान स्थापत्य कला के सिद्धान्तों का स्रोत वैदिक मन्त्रों के माध्यम से प्रदर्शित कर विवेचित करना ही इस लेख का परम उद्देश्य है।

The Vedas are the reservoir of all the knowledge man has acquired till date. All the branches of arts have their origin and source in Vedas. The paper aims at exploring the varied traditions of arts, their vedic references and aspects and to trace the continuous existence of these vedic arts in Indian as well as Western spheres.

मुख्य शब्द : स्थापत्य, वैदिकयुग, कला, निर्माण, ऋग्वेद, भवननिर्माण ।

Women Education, Vedas, Spirituality, Welfare

प्रस्तावना

वेद ज्ञान के रत्नाकर हैं। सभी विद्याओं एवं कलाओं के मूलस्रोत वेद के विषय में मनु ने स्पष्टतया उद्घोषित किया है – ''सर्वज्ञानमयो हि सः''। वेदरूपी ज्योति पुँज से निःसृत ज्ञान की विविध रश्मियाँ अनेक प्रकार एवं विविध आयामों को प्राप्त कर पूर्ण परिपक्व रूप में हमारे समक्ष उपस्थित होती है। ज्ञान की विविध रश्मियों सदृश विविध कलाएँ भी वेद रूपी प्रकाशपुंज से उद्भूत होकर सर्वत्र प्रकाशमान हैं। स्थापत्यकला का कलाओं के क्षेत्र में प्रमुख स्थान है तथा उसके उत्स वेद में यत्र–तत्र उपलब्ध हैं।

मानव अपनी भावाभिव्यक्ति कला के माध्यम से प्रस्तुत करता है एवं कला किसी भी देश व प्रांत की संस्कृति को विशिष्टतया प्रस्तुत करने के साथ–साथ उस प्रांत या देश के भावात्मक एवं रागात्मक ऐक्य को प्रतिष्ठापित करती है। वास्तव में कला का अर्थ मानव के अव्यक्त भावों एवं विचारों को कतिपय साधनों के माध्यम से व्यक्त करना है। अन्य शब्दों में कला–सौन्दर्य एवं आनंदाभिव्यक्ति द्वारा सुखप्रदायित्री है –

''कं लाति ददाति इति कला।''

कल् धातु – संख्यान – (1) – स्पष्ट वाणी में प्रकटन

भारतीय कलाएँ भावनाओं की अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम हैं। भारतीय परम्परा में द्विविध प्रधान रूप उपलब्ध होते हैं यथा विद्या द्विविद्या है – परा, अपरा। कला का परिगणन ''अपरा'' के अन्तर्गत किया जाता है। पाश्चात्य दार्शनिक प्लेटो ने सौन्दर्य में नैतिकता व उपयोगिता से गहन सम्बन्ध मानते हुए कला में ''शिव तत्त्व'' की उपस्थिति अति अनिवार्य मानी हैं। वात्स्यायन ने 'कामसूत्र' में चौसठ कलाओं का निर्देश किया है परन्तु पाश्चात्य विद्वान अपने दर्शन द्वारा 'आँखों' को गतिमान करने वाली पांच कलाएँ मुख्य स्वीकार करते है। उनके मतानुसार – स्थापत्य, वास्तु, मूर्ति, चित्र, संगीत एवं काव्यकला ही उपयोगी है। प्लेटो द्वारा ऐन्द्रिय संवेगों की अभिव्यक्ति को कला स्वीकार नहीं किया गया। वास्तव में कला एक ऐसा संयोजक तत्त्व है जो विविध देशों एवं संस्कृतियों को जोड़कर उनके हृदयों को भी संयोजित करने का कार्य करती है। श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर के मतानुसार कला की महत्ता विशिष्टतया दृष्टिगत होती है–

"Literature music and arts all are necessary for the development and flowering of a student to form an integrated total personality."

भारतीय विविधताओं का देश है अतः कलाओं की विविधता आत्माभिव्यक्ति, सृजनात्मकता एवं संस्कृति के बोध की परिचायिका है। स्थापत्य कला भी अन्य कलाओं की भांति भारतीय मनीषा का उज्ज्वल पक्ष प्रस्तुत करती है। डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल ने धर्म एवं कला को भारतीय संस्कृति का दर्पण कहा है। मनुष्य चिन्तनशील प्राणी होने के कारण सभ्यता के विकास के साथ–साथ कलाओं में भी अभिरुचि रखने लगा तथा विविध कलाओं की भांति स्थापत्य सम्बन्धी विचार भी स्पष्ट होने लगे क्योंकि जीवन में स्थिरता आते ही गृहनिर्माणादि, भवननिर्माण, मन्दिरनिर्माणादि कार्य चिन्तनपरम्परा के अभिन्न अंग बन गए। परिणामस्वरूप स्थापत्यकला ''धार्मिक'' एवं ''लौकिक' इन दो रूपों में विकसित हुई।

श्री भगवनशरण उपाध्याय जी के मत में सभ्यता के उदय से सुदूरपूर्व ही मानव कोरने गढ़ने खींचने तथा सिरजने लगा था अर्थात् कला सृजन के अनेक पक्ष विद्यमान थे।[1] इसी प्रकार श्री बी.के. गोखले जी का कथन भी यही स्पष्ट करता है।

"Indian art is not only one of the oldest and profusely productive but it also shows a remarkable diversity."[2]

हर्बर्ट रीड के अनुसार कला सुन्दर आकारों के सृजन का प्रयास है –

"Art is most simply and most usually defined as an attempt to create pleasing forms."[3]

भारतीय संस्कृति के सभी पक्षों को प्रतिबिम्बित करने वाली यह कला दो वर्गों में विभक्त है –

1. स्थित कलाएँ – वास्तुकला, मूर्तिकला, स्थापत्य कला।
2. गतिशील कलाएँ – काव्य–नृत्य संगीत।

स्थित कलाओं में भी स्थापत्य एवं वास्तुकला का परिगणन होता है। वास्तु शब्द $\sqrt{}$ वस धतु ''निवसने'' से निष्पन्न है जिसका अर्थ है वास करना निवास हेतु भवन आवश्यक है – आवास, वसति, इत्यादि शब्दों का निर्माण $\sqrt{}$ वस् धातु से हुआ है। इसी के पर्याय रूप में 'स्थापत्य' शब्द का प्रयोग है। यह शब्द 'स्थपति' से उद्धृत है जो $\sqrt{}$ स्था धातु तथा पति – प्रत्यय के योग से निर्मित है।

$\sqrt{}$ स्था धातु का अर्थ है स्थित (खड़ा या बैठा होना) इसी धातु से स्थिर स्थावर, स्थिति एवं स्थानादि शब्द निष्पन्न होते हैं। 'भवन' भी स्थिर रहता है वह स्थान विशेष है उसका निर्माणकर्त्ता तथा निर्माण सम्बन्धी समस्त सामग्री एवं प्रविधि का स्वामी या पति 'स्थपति' है तथा उसकी रचना सम्बन्धी प्रक्रिया ही स्थापत्य है।

स्थापत्य कला की प्राचीनता एवं स्थिरता वैदिक युग में ही प्रतिष्ठापित हो गई थी। प्रसिद्ध इतिहासकार डा. मुखर्जी के मतानुसार भारतीय वास्तु एवं स्थापत्य कला के प्रादुर्भाव का इतिहास वैदिककालीन धार्मिक भावनाओं से सम्बद्ध है –

Architecture like other arts had to find a religious origin and justification. It originated in the religious need of constructing yajna vedikas and yajna salas, alters and halls for performance of vedic sacrifices.[4]

प्राचीन भारतीय स्थापत्य कला के प्रभाव से प्रभावित होकर John Raskin को कहना पड़ा कि स्थापत्य कई देशों का कार्य हो सकता है –

Architecture is a work of nations.

इसी प्रकार Architecture is geomatry - Alvaro, Ziza के कथानुसार सम्पूर्ण पाश्चात्य जगत हमारी वैदिक स्थापत्य एवं वास्तुकला के प्रभाव से चकाचौंध होकर भावात्मक परिभाषाएँ देने को बाध्य हो जाते है।

ज्ञान के अन्य क्षेत्रों की भांति स्थापत्य के क्षेत्र में भी जो मापदण्ड पाश्चात्यों ने उत्तरकाल में स्थापित किए वे सब हमारे वैदिक ग्रन्थों में सुरक्षित थे।

वैदिक काल में उपलब्ध गृह–निर्माण, मन्दिर निर्माण, नगर निर्माण, नगर परियोजना सम्बन्धी तथ्यों का पर्यवेक्षण ही इस लेख का मुख्य उद्देश्य है। वैदिक युगीन ऋषि अत्यन्त सचेत थे। वे भविष्य में आने वाली भवन निर्माण सम्बन्धी एवं गृह–निर्माण संबंधी सभी समस्याओं से अवगत थे। उनकी क्रान्तकारी दृष्टि सभी संभावित समस्याओं का निवारण प्रस्तुत करती है जो वर्तमान युग में भी जन–सामान्य हेतु अतीव उपयोगी है क्योंकि ऋषि तो मन्त्रद्रष्टारः थे।

''ऋषयस्तु मन्त्रद्रष्टारः न तु कर्त्तारः''

स्थापत्य सम्बन्धी किंचिद वैदिक युगीन तथ्य निम्न प्रकार है –

वैदिक गृह निर्माण

ऋग्वैदिक उद्धरणों के माध्यम से स्पष्ट होता हैं कि एक एकल व संयुक्त परिवार हेतु उनका निवास स्थान गृह कहलाता था तथा उनका अधिष्ठाता देव ''वास्तुपति'' था। धाम, गुह, धामन्, निवासनम्, वसिनम्, सदस्, हर्म्यम्। आदि सभी नाम 'गृह' हेतु प्राप्त होते हैं जो उस युग की विशाल शैली एवं आकार–प्रकार को द्योतित करता है – ऋग्वेद 6.15.3

स त्वं दक्षस्यावृको वृधो भूरर्यः
परस्यान्तरस्य तरुषः।
रायः सूनो सहसो मर्त्येष्वा हर्दिर्यच्छ वीतहव्याय
सप्रथो भरद्वाजाय सपृर्थः।[5]

सत्य दक्षता बढ़ाने वाला, अत्यन्त तारने वाला पार उतारता हैं। प्रभु अभिव्यक्त धन साधक घर प्रदान करता है। अन्तः श्रेष्ठ साधक को प्रभु समर्पण के विराट घर देता है। ऋग्वेद 1/30/20.

शतमश्मन्मयीनां परामिन्द्रोव्यास्यत्
दिवोदासाय दाशुषे।''

सन्त ज्योति का सेवन करने वाला साधक के घर के द्वारों को बन्द कर देता है। सन्त साधक को प्रभु आश्रित करता है।

इसी प्रकार अन्यत्र स्पष्ट किया गया कि प्रभु पुत्र सन्त हमें तत्काल बल देता है। साधक को सन्त निज धाम ले जाता है। सनातन प्रकाश प्रदान करता है।

'अच्छिद्रा सूनो सहसो नो अद्य स्तोतृभ्यो मित्रमहुः शर्म यच्छ।

अग्ने गृणन्तमर्महस नपात्पूर्भिरायसीभिः[6]

वैदिक युगीन गृहनिर्माण परम्परा एवं श्रृंखलाविवेचन से प्रभावित होकर प्रसिद्ध विद्वान त्मदवन ने अपने लेख में लिखा कि वैदिक गृह बांसों से बना एक बवउचवेमक वितउनसं था तथा दीवारें पत्थर ईंटे की न होकर परस्पर गुंथी हुई थी।[7]

2. पुरविवेचन : ऋग्वेद में पुरविवेचन भी उपलब्ध होता है – इन्द्र के सौपुरों का वर्णन है।

''शतमश्मन्मयीनां पुरामिन्द्रे व्यांस्यत्''

तथा

''अस्वापयद्दु भीतये सहस्रां त्रिंशत् हर्यैः दासानामिन्द्रो मायया।''

इन्द्र ने माया से तीस सहस्र दासों को दभीति के लिए सुला दिया।

पुरनिर्माण हेतु सुन्दर सुव्यवस्थित व्यवस्था का विवेचन प्राप्त होता है। वैदिक गृहनिर्माण एवं पुरनिर्माण प्रक्रिया से प्रभावित होकर पाश्चात्यों को कहना पड़ा कि यह समस्त परम्परा काफी कठिन है –

"Architecture is difficult it is very tough - Zaifa Hadid.

इसी तथ्य को उद्घोषित करते हुए New York Times में Bernard Tschumi ने कहा कि स्थापत्य एक बड़े स्तर का उपक्रम है जो वित्तीय भी है और नीतियुक्त भी है।

Architecture is always related to power and related to large interest whether financial or political - Bernard Tschumi.

महतनिर्माण प्रसंग में भी वैदिक युग में हजार स्तम्भ और सहस्र द्वारों का विवेचन किया गया है।[9]

अनिष्टकारक वास्तुदोष निवारण

वैदिक युग में वास्तु एवं वास्तु सम्बन्धी दोषों के निवाराणार्थ मंत्र भी उपलब्ध होते है ताकि व्यक्ति स्वामीष्ट की प्राप्ति कर सके। यह तत्कालीन युग की विशेषता ही है कि सूक्ष्म से सूक्ष्म समस्या का समाधान हेतु मंत्र देकर ऋषि ने जनसामान्य को आश्वस्त कर दिया है।

''तिरश्चराजेरसितात् पृदाकोः परि संभृतम्
तत् कङ्कपर्वणो विषमियं वीरुदनीनश्यत्''

(अथर्ववेद 7.55)

इयं वीरुन्मधुजाता मधुश्चुन्यघला मधूः
सा विहुतस्य भेषज्यघो मशकजम्भनी।
ऋचं साम यदग्नाक्षं छविरोज्ञो
एष मा तस्मान्मा हिंसीद वेदः पृष्ठः
येन बेहद बभूविथ नाश्यामसि तत् त्वत्
इदं तदन्यत्र त्वदपपुरे निदध्यसि – अथर्ववेद 3/22/1

अर्थात् जिस कारणवश तूँ वंध्या हुई है उस कारण को तुझ से नष्ट करते है उसे और कहीं हटाते है।

गर्भ धारण हेतु आशीर्वाद देते हुए कहा गया है–

आ ते योनिं गर्म एत पुमान् इदपृधिम्
आ वीरोऽत्र जायतां पुत्रस्ते दशमास्यः।

अथर्ववेद 3/22/2

इसी प्रकार अथर्ववेद में अनेकत्र अरिष्टनिवारक, सुरक्षात्मक, संरक्षणात्मक मंत्रों का प्रयोग है जो तत्कालीन वास्तु एवं स्थापत्यकला के उत्कृष्ट उदाहरण कहे जा सकते हैं। सभ्यता एवं संस्कृति का उत्कृश्ट युग दृष्ट था यथा 3.12.1 में सुरक्षात्मक पानी, संरक्षणात्मक मंत्रों का प्रयोग है।

मन्दिर स्थापत्य कला का मुख्य अंग है। धार्मिक आस्थाओं के मुख्य प्रतीक मन्दिरों में हिन्दू धर्म के सभी सम्प्रदायों के साथ–साथ जैव एवं बौद्धधर्म के सिद्धान्तों का भी विवेचन मिलता है तथा मूर्ति पूजा की भावना के साथ ही मन्दिर निर्माण की प्रक्रिया प्रारंभ हुई।[10] मन्दिर प्रमुख धार्मिक स्थापत्यकला के प्रतिरूप है जिनमें भारतीय स्थापत्यकला का चरमोत्कर्ष मिलता है। मन्दिरनिर्माण एवं शिल्प भारतीय समाज की अभिरुचि प्रवृत्ति एवं आस्था को समन्वित रूप से प्रस्तुत करता है।

मन्दिरनिर्माण का उद्देश्य ही देवप्रतिमा की स्थापना है। वैदिकयुग में देवप्रतिमा तथा मन्दिरनिर्माण का उल्लेख प्राप्त होता है ''यक्ष सदन'' का उल्लेख ऋग्वेद में वैदिकयुगीन वेदियाँ यज्ञशालाएँ मन्दिरों के मध्य ही थी। तैत्तिरीयसंहिता में झोंपडी सदृश रचना को गर्भगृह कहा गया।

वस्तुतः स्थापत्यकला मूर्तिकला – वास्तुकला में अन्तः सम्बन्ध है। ऋग्वेद में देववर्णन तथा उनमें 'रुद्र' विवेचन स्थापत्यकला का विशिष्ट उदाहरण है।

शिव का संहारक रूप मूर्तिरूप में प्राप्त होता है तथा उससे पूर्व कल्याणकारी रूपमूर्ति रूप में प्राप्त होता है।

''सेनेव जृष्टामे दधात्यश्नुर्न द्विद्युत्वेषत्रनी
यमो ह ज्ञातो यमो जनित्वै जारः कुनीतां पतिर्ज नीनाम्।''

(ऋग्वेद 1.16.4)

तत्सु वा मित्रावरुणा महित्वमीर्मातस्थुशीजीरहभिर्दुदुहे।
विश्वाः पिन्वथः स्वसरस्य घेना अनुवामेका पविरा ववर्त –

(ऋग्वेद 5/62/2)

दोनों ज्योतिनाद उस महान प्रभु को प्राप्त कराता है।

अन्तरस्थित आत्मा को प्रकाश से परिपूर्ण करता है, सब धन प्रकट कर तृप्त करता है। वह अद्वितीय वज्र प्राप्त करता है।

अतः वैदिकसाहित्य के अध्ययनोपरान्त यह स्पष्ट होता है कि वैदिक संस्कृति में विश्वकर्मा समस्त कलाओं का जनक था। ऋग्वैदिक गृहनिर्माण सम्बन्धी तथा उसमें विद्यमान वास्तुदोष निवारक सम्बन्धी मंत्रों के अध्ययनोपरान्त यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि तत्कालीन मानव मनीषा एवं तद्भूत संस्कृति अतिविकसित हो चुकी थी। ''त्वष्टा'' या ''वातोस्पति'' कुशल शिल्पी कहा गया था।[11] एवमेव भूमिपूजन, नीवपूजन गृहप्रवेश सम्बन्धी कर्मकाण्ड द्वारा स्पष्ट होता है कि तत्कालीन वास्तु एवं स्थापत्यकला चरमोत्कर्ष पर थी।[12] वैदिकयुग में भवनों से सम्बन्धित अजिर (आंगन) सभा आस्थामण्डप पत्नीसदन अग्निशाला पशुशाला (गोष्ठ) का भी विवेचन प्राप्त होता है।[13] यज्ञवेदियों का निर्माण का उल्लेख भी प्राप्त होता है। डा. मुखर्जी इसी तथ्य की पुष्टि में कहते

हैं –

Indian borrowed knowledge of architect and allied science from the mathematical technique and construction of Yajnasthali and Yajnasala.

We cannot today resist the feeling of greatness and grandeur that we experience at the sight of a powerful iron structure. It is a feeling that was almost foreign to previous generations.

Goller Theory का क्रांतिकारी योगात्मक कार्य हो या Zur Asthetik der Architektue (Towards an Asthetics of Architecture) तथा The origin of Architectured style forms हो या Themes and Methologies of Botticher and Semper हो सभी में तथ्यों एवं तत्वों के साथ style, अनुपात एवं aesthetic values पर जोर दिया गया है।

1886 में Henrich Wolffin ने अपने शोधात्मक ग्रन्थ में spirituality and feeling को स्थापत्य का मूलाधार माना है Psychic Emotions को उसने शक्ति का आधार मानकर कहा –

The ornament in Architecture is as the expression of excessive form strength.

Wagner ने भी Empire Style को मुख्यता प्रदान की।

Botticher का भी नाम इस श्रृंखला में उल्लेखनीय है उनकी Theory Frame Work जो कि वैदिक Theory या सिद्धान्त पर आश्रित था।

वर्तमान युगीन मन्दिर निर्माण की तीनों शैलियाँ–

1. नागर शैली
2. द्राविद शैली एवं
3. बेसर शैली में वैदिकयुगीन झलक प्राप्त होती है।

पाश्चात्य स्थापत्य विशेषज्ञों में Hubsch, Botticher तथा Semper के नाम उल्लेखनीय है।

महाकालेश्वर मन्दिर, त्र्यम्बकेश्वर मन्दिर, वैष्णो देवी मन्दिर, भूगर्भीय अनुसंधान परम्परा का परिणाम है। महाकालेश्वर मन्दिर का स्थापत्य आदिकाल का है।

पाश्चात्य परम्परा के अनुसार Thom Myne के मत में Architecture is a way of seeing thinking and questioning one world and one place in it.

Jessery Inaba के मतानुसार Architecture is a good example of complex dynamic of giving.

Nocolai Ourouss Off ने 2A Times में अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि Architecture an art of a optimism अर्थात् वैदिक युग की आशावादिता का स्पष्ट प्रभाव यहाँ दृष्टिगत है।

Ludwig Mies van der rohe ds erkuqlkj Architecture is a real battle ground of the spirit.

Aljen Oosterman के मत में स्थापत्य कला परिस्थितियों को सुधारने हेतु है –

Architecture is about improving conditions environmental, social and sometimes also political.

Kervin, J. Singh ने अपने 25 Rules for a successful life in Architecture में स्पष्ट किया है कि स्थापत्य पर्यावरण का संरक्षक है।

Architecture is about serving others through the design of the built environment.

Architecture is not just building its a mean of improving people quality of life. (by Diebedo Francis Kere in Washington Post)

इन सभी परिभाषाओं के माध्यम से स्पष्ट होता है कि स्थापत्य आशा, सम्पूर्णता, संशोधन, उच्च जीवन स्तर, संशोधित पर्यावरण एवं उच्च जीवनशैली की शिक्षा देता है। पाश्चात्य परम्परा के ये सभी विद्वान उन्हीं सिद्धान्तों को बार–बार पोषित करते हैं जो हमारे वैदिक ग्रन्थों में यत्र–तत्र विद्यमान है।

आज जिस शास्त्र को हम पाश्चात्य प्रदत्त मान बैठे हैं उसके बीजभूत स्रोत वैदिक ग्रन्थों में प्रस्फुटित है जो पल्लवित पुष्पित परिवर्धित होकर वर्तमानयुगीन भवन निर्माण, नगरनिर्माणयोजनादि में दृष्टिगत होते हैं। न केवल भारतीय परम्परा अपितु पाश्चात्य परम्परा भी मुक्तकंठ से आदियुग के ग्रंथों व अध्ययनों की सार्थकता को स्वीकार कर उसकी प्रशंसा करते है यथ Catherine Slessor us The Architecturual Review में कहा –

Architecture is characterised by endurance and longevity a long education long Jeaning, tong hours and long lives.

अध्ययन का उद्देश्य

त्रिकालातीत स्थापत्य कला के वैदिक युगीन उपलब्ध तथ्यों को मूल उद्धरणों के माध्यम से विवेचित करना एवं वर्तमान युगीन गृह निर्माण एवं स्थापत्य कला संबंधी तथ्यों का विवेचनात्मक विश्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कर कालजयी वैदिक युगीन स्थापत्य कला की विशिष्टता प्रदर्शित करना तथा वर्तमान स्थापत्य कला के सिद्धान्तों का स्रोत वैदिक मन्त्रों के माध्यम से प्रदर्शित कर विवेचित करना ही इस लेख का परम उद्देश्य है।

The ultimate aim of this article is to demonstrate through and explain the Vedic all time architectural facts, through original quotations and to present a critical analytical and comparative study of the facts of the present era of house building and architecture, showing the uniqueness of the classical Vedic era architecture and the source of the principles of the current architecture

निष्कर्ष

अतएव अपने आदिकालीन वैदिक ज्ञान को सुरक्षित रखना हम सबका कर्त्तव्य है। वैदिक युग में विद्यमान पूर्णविकसित स्थापत्यकला वर्तमान युग में पूर्णतः पुष्पित एवं विकसित होकर न केवल भारत अपितु अन्यत्र भी अपनी कीर्तिपताका फहरा रही है जिसे संरक्षित करना, आधुनिकता से जोड़ना एवं उसका संवर्धन करना हमारा पुनीत कर्त्तव्य है। अन्त में वेदमयी वाणी का यह कथन अतुलनीय एवं अनुकरणीय है –

अहमेव स्वयमिदं ब्रवीमि जुष्टं देवेभिरुत मानुषेभिः
यं कामये तमुग्रं घ्णोमि तं ब्रह्माणं तं ऋषिं तं सुमेधाम्।।

अंत टिप्पणी

1. *उपाध्याय भ.श. – भारतीय कला का इतिहास – भूमिका।*
2. *Gokhale, B.K. Ancient India, p. 185.*
3. *रीड हर्बर्ट – The Meaning of Art, p. 16.*
4. *मुखर्जी राधाकुमुन्द – हिन्दू सिविलाइज़ेशन।*

5. *ऋग्वेद 4.30.20.*
6. *If we rely on vedic text we are in the presence of a type of a house that is extremely sedimentary composed on an armature of posts connected at the summit by transversa beams onto which a thatched covering is attached.*
7. *ऋग्वेद 1/58/8.*
8. *ऋग्वेद 10/18/12.*
9. *भारतीय मूर्ति शिल्प एवं स्थापत्यकला – मीनाक्षी कासलीवाल।*
10. *आश्वालयन गृहसूत्र 7–6–8.*
11. *गोभिलगृह्य सूत्र।*
12. *ऋग्वेद 7/88.*